

आज का पुरुषार्थ, 16 April 2022

From: BK Suraj bhai

Website: www.shivbabas.org

धारणा – “समय नजदीक है तो जो स्थिति बनाने है वह अभी बनाये
ऐसे दृढ़ता भरे अपने अंदर ”

मनुष्य को अपने जीवन में आगे बढ़ने के लिए **निर्भय** होना परम आवश्यक है। उसे भिन्न-भिन्न तरह की भय सताती है। कभी **पास्ट** की घटनाएं जो कुछ हो गई है। फिर ना वह हो जाये ऐसा भय।

भविष्य में कहीं ऐसा न हो जाये ऐसा भय, **सम्बन्ध** में टकराव का और डिवोर्स का भय, भूत-प्रेतों का भय, असफलता का भय, मृत्यु का भय, बीमारियों का भय, इसी तरह विभिन्न प्रकार की **भय** मनुष्य के अंतरचित में समाये रहते है।

जो उसकी सूक्ष्म शक्तियों को भी नष्ट करते है। और उसके मार्ग में सूक्ष्म अवरोध भी पैदा करते है। हमें भय से मुक्त होकर निरंतर आगे बढ़ना है।

क्योंकि **महाविनाश** को देखना है। जो कुछ इन आंखों से दिखता है वह नहीं रहेगा।

सबकुछ हमारे आंखों के सामने नष्ट होता हुआ दिखाई देगा। जैसे हम किसी पुराने बिल्डिंग को तोड़ कर नया बनाना चाहते हैं। जब उसे तोड़ते हैं, जब **सफाई** होते हैं कितनी गंदगी धूल बाहर आते हैं।

ऐसे ही जब यह दुनिया टूटेगी, यह कांटों के जंगल को आग लगेगी। तब चारों ओर भय का माहौल व्याप्त हो जायेगा। तब हर व्यक्ति भयभीत होगा। **मृत्यु का भय**, सबकुछ जाने का भय।

लेकिन अगर हम पहले से ही अभ्यास करते रहे ... सबकुछ जाने वाला है, सबकुछ विनाशी है जो कुछ इन आंखों से दिखता है वह नहीं रहेगा। कुछ पहले जायेगा, कुछ बाद में।

यदि हम बहुत अभ्यास किया होगा कि

" मैं अकालमूर्त आत्मा हूँ, मुझे तो मरना ही नहीं है, जिसे मरना है वह मैं नहीं हूँ, मैं कभी मरती नहीं हूँ, मरता तो यह शरीर है, मुझे तो बहुत सुन्दर शरीर मिलेगा, देव शरीर मिलेगा "

और जिसने लम्बे समय से अभ्यास किया होगा ..

" मैं मास्टर सर्वशक्तिमान हूँ, सर्वशक्तिमान बाबा मुझसे कम्बाइण्ड है, वो मेरी छत्रछाया है "

... उनके अंदर निर्भयता बढ़ती जायेगी और आने वाले समय को भी वो बहुत आसानी से पार कर जायेगी।

संकल्प कर ले ... " **हमें निर्भय होना है "**

अपने अंदर चेक कर ले " किस तरह का मय मुझमें समाया हुआ है ? "

अनचाहा भय, छुपा हुआ भय, जिसका कोई कारण नहीं होता।

सवरे उठकर इक्कीस बार याद किया करे ... " **मैं मास्टर सर्वशक्तिमान हूँ और निर्भय हूँ "**

बहुत गुड फीलिंग अपने को दे ... " **मैं दोनों हूँ "**

तो धीरे-धीरे sub-conscious mind से यह छुपा हुआ भय भी खतम होता जायेगा। और हम निर्भय बनते जायेंगे।

योगी तो **निर्भय** होते है। उनके **वायब्रेशन्स** दुसरे को भी निर्भय बना देते है।

तो चले इस **निर्भयता के शक्तिशाली** पथ पर आगे बढ़े। और साथ- ही - साथ हमें दृढ़ भी होना है। एक सुन्दर महान लक्ष्य बनाये अपने जीवन का। उस लक्ष्य को दृढ़ता पूर्वक पूर्ण करने का संकल्प कर ले।

जहाँ दृढ़ता नहीं होती, ढीलापन होता है। कर लेंगे, हो जायेगा किसने किया? आज नहीं तो कल लेंगे। आज तबीयत खराब है, ठीक हो जाने दो।

यह सब **संकल्प** हमारे दृढ़ता को कमजोर करते है। लेकिन जो भी हो जाये, हमें जहाँ पहुँचना है वहाँ पहुँचना ही है। जो श्रेष्ठ कर्म करने है वह करने ही है। जितना **योग अभ्यास** करना है वह करना ही है।

ऐसे दृढ़ता हो ... चाहे सवेरे उठने में, चाहे योग अभ्यास करने में, चाहे कोई कार्य करने में, चाहे सेवाओं के फ़ील्ड में। जब हमारे अंदर ऐसी दृढ़ता होंगी ... तो जहाँ दृढ़ता है वहाँ सफलता है।

भय भी समाप्त होगा, ढीलापन भी समाप्त होगा। और हम अपने लक्ष्य की ओर अपने मंजिल की ओर तेजी से आगे बढ़ते ही जायेंगे।

तो आइये चले, दृढ़ हो जाये। तभी लक्ष्य मिलेगा, तब ही मंजिल मिलेगी।
क्योंकि लक्ष्य बहुत ऊँचा है। और **समय अंतिम घण्टियाँ बजा रहा है।**

॥ ओम शान्ति ॥

BK Google: www.bkgoogle.org

Website: www.shivbabas.org